विषय : हिंदी द्‌वितीय भाषा (संपूर्ण)

भाषाई कौशल/क्षेत्र: श्रवण **पाठ्‌यक्रम** **कक्षा–आठवीं**

अ क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल–'पहेली'** बोली गई पहेली पहचानना **उदा–** एक राजा की अनोखी रानी। दुम के मार्ग से पीती पानी। (उत्तर – दिया)	संदर्भ साहित्य गीत, कविता, चार्ट, रेडियो, दूरदर्शन ध्वनिफीत, संगणक, सी.डी., डी.वी.डी	* पहेली सुनने में रुचि लेता है। * पहेली सुनने की उत्सुकता बढ़ती है। * सुनने की एकाग्रता बढ़ती है। * कक्षा में पहेलियाँ सुनता–सुनाता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * मौखिक कृति * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	प्रयाणगीत, कविता, शौर्यगीत, सुनना–सुनाना।		* प्रयाणगीत, कविता, शौर्यगीत सुनने–सुनाने में रुचि लेता है। * कविता के माध्यम से भावनाओं का समायोजन होता है। * तनावमुक्त होकर कविता श्रवण करते हुए रसास्वादन करता है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है। * सरल प्रश्नों के उत्तर देता है। * सुने हुए गीत, कविता, को सस्वर सुनता है।	
१.	ऐतिहासिक, साहसिक कथा,जीवनी सुनना–सुनाना।	* कथा चार्ट तथा फोल्डर * सी.डी., डी.वी.डी, संगणक, दूरदर्शन, रेडियो * संदर्भ साहित्य	* ऐतिहासिक कथा एवं जीवनी सुनने–सुनाने में रुचि लेता है। * ध्यानपूर्वक सुनने में अभिरुचि जागृत होती है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
		ध्वनिफीत, चित्र (महान विभूतियों के)	* ऐतिहासिक महान विभूतियों की कथा एवं जीवनी से प्रेरणा ग्रहण करता है। * महान विभूतियों द्वारा बनाए हुए मार्ग पर चलने की ओर उन्मुख होता है। * अपनी सांस्कृतिक विरासत के प्रति गौरव महसूस करता है। * उपरोक्त संदर्भ में पूछे गए छोटे–छोटे प्रश्नों के उत्तर देता है।	* सहपाठी मूल्यांकन
३.	परिसर के महत्वपूर्ण स्थलों के बारे में सुनना–सुनाना। (परिसर एवं पर्यावरण संरक्षण के विशेष संदर्भ में)	परिसर के महत्वपूर्ण स्थलों की सूची, परिसर के दर्शनीय स्थलों एवं महत्वपूर्ण स्थानों के चित्र चार्ट * रेडियो * दूरदर्शन * ध्वनिफीत * संगणक * सी.डी. * डी.वी.डी. * संदर्भ साहित्य	* परिसर के ऐतिहासिक स्थल, विज्ञान केंद्र, सांस्कृतिक केंद्र, महत्त्वपूर्ण नदी, तालाब, अभयारण्य आदि के बारे में सुनने–सुनाने में रुचि लेता है। * उपरोक्त संदर्भ में एकाग्रतापूर्वक सुनने की रुचि बढ़ती है। * परिसर के महत्वपूर्ण स्थलों के संरक्षण की भावना जागृत होती है। * श्रवण के माध्यम से जल,ध्वनि,वायु प्रदूषण के कारणों एवं उपायों से अवगत होता है। * वृक्षारोपण एवं पशु–पक्षियों के संरक्षण की भावना जागृत होती है। * स्वयंस्फूर्त आत्मविश्वास के साथ कक्षा में जानकारी सुनाता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
४.	कृषि कार्यक्रम, प्रसंग, घटना एवं घोषवाक्य सुनना-सुनाना।	कृषि कार्यक्रम, प्रसंग, घटना संबंधी चित्र एवं चार्ट * घोषवाक्य पट्टी * सी.डी., डी.वी.डी. * ध्वनिफीत, रेडियो, * दूरदर्शन	* विविध माध्यमों से कृषि कार्यक्रम एवं घोष वाक्य सुनने-सुनाने में रुचि लेता है। * सुने हुए कार्यक्रम अन्य विद्यार्थीयों को सुनाता है। * कृषि व्यवसाय के प्रति आकर्षित होता है एवं कृषक के प्रति आत्मीयता निर्माण होती है। * सुनी हुई जानकारी से आपदा प्रबंधन हेतु जागरूक होता है। * शब्द संपत्ति का विकास होता है। * सुने हुए विषयों पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
५.	पहेलियाँ, नाटयांश सुनना-सुनाना से १०० तक के अंकों को सुनना-सुनाना।	* पहेलियों के लिखित चार्ट, अंक चार्ट, सी.डी., डी.वी.डी. दूरदर्शन, रेडियो, ध्वनिफीत आदि।	* पहेलियाँ, नाट्यांश, सुनने-सुनाने में रुचि लेता है। * एक से सौ तक के अंकों को सुनने में रुचि लेता है। * श्रवण में एकाग्रता बढ़ती है। * कौतूहल जागृत होता है। * सुने हुए संदर्भ में पूछ गए छोटे-छोटे प्रश्नों के उत्तर देता है।	* मौखिक * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य

भाषाई कौशल/क्षेत्र : भाषण-संभाषण **कक्षा-आठवीं**

अ. क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल-''आस-पास की दुनिया''** **कृति-**(आठ - आठ विद्यार्थियों के गुट बनाना। अलग-अलग पर्चियों पर क्रिकेट-फुटबॉल, हॉकी, कबड्डी, सर्कस, सब्जीमंडी, मेला, जंगल लिखकर एक जगह रखना। गुट प्रमुख द्वारा एक पर्ची उठाना। पर्ची में लिखे गए विषय के बारे में गुट के प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा एक-एक वाक्य बोलकर-शृंखला बनाना)	अलग-अलग खेल आदि की पर्चियाँ।	* रुचिपूर्वक खेल में सहभागी होता है। * खेल, सर्कस, सब्जीमंडी, मेला आदि के बारे में वाक्य बोलता है। विषय के अनुसार सोचकर एक-एक वाक्य बनाकर बताता है। * विविध विषयों की जानकारी प्राप्त करता है। * अपने पूर्व अनुभव या जानकारी का उपयोग करते हुए खेल में शामिल होता है।	* मौखिक कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	राज्य, देश, पड़ोसी देश आदि का परिचय बताना। (खान-पान, आवास, त्योहार, पोशाक, संस्कृति)	* राज्य, देश, विश्व के मानचित्र * संदर्भ साहित्य	* राज्य, देश, पड़ोसी देश के खान-पान, आवास, पोशाक संस्कृति, त्यौहार के बारे में आपस में चर्चा करता है। * उपरोक्त संदर्भ में बताता है। * भाषण प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * शांति, प्रेम, सहिष्णुता आदि भावों की निर्मिति होती है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* अपनी संस्कृति, विरासत के प्रति आदर महसूस करता है। * अपने राज्य, देश के प्रति प्रेमभाव उत्पन्न होता है। * राष्ट्रीय संपत्ति के संरक्षण की भावना निर्मित होती है। * पड़ोसी राज्य तथा देश के प्रति आदरभाव विकसित होता है। राष्ट्रीयता तथा विश्वबंधुत्व की भावना विकसित होती है।	
२.	दिए गए विषय पर पक्ष-विपक्ष में चर्चा करना (परीक्षा, दूरदर्शन, संगणक, विज्ञान-वरदान, मोबाईल (भ्रमण ध्वनि), संयुक्त परिवार, शिक्षा अधिकार आदि।)	संदर्भीय विषयों के चित्र-चार्ट।	* दिए गए विषयों के बारे में चिंतन-मनन करता है। * दिए गए विषयों के पक्ष-विपक्ष में अन्य विद्यार्थियों के साथ चर्चा करता है। * विचारक्षमता एवं तार्किक क्षमता में वृद्धि होती है। * निर्णयक्षमता में वृद्धि होती है। * भाषण प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * अपनी बात दृढ़तापूर्वक रखने की क्षमता विकसित होती है। * आत्मविश्वास बढ़ता है। * विश्लेषण क्षमता में अभिवृद्धि होती है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
३.	* बातचीत में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करना।	मुहावरों एवं कहावतों का अर्थ सहित चार्ट	* मुहावरों और कहावतों के बारे में आपस में चर्चा करता है। * मुहावरों और कहावतों का अर्थ समझता है। * अपनी औपचारिक-अनौपचारिक बातचीत में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करता है। * प्रभावी भाषण-संभाषण करने की ओर उन्मुख होता है। भाषा सौंदर्य की अनुभूति विकसित होती है। रचनात्मकता की ओर उन्मुख होता है। * छोटे परिवार का महत्त्व समझता है।	* मौखिक कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	* दोहे, प्रयाण गीत, बोधकथा की हावभाव, लय, गति से प्रस्तुति करना। * १ से १०० तक के अंकों का शुद्ध उच्चारण करना।	* दोहे, प्रयाणगीत, बोधकथा के चार्ट एवं कथाचित्र। * अंकों के अक्षरों में लिखे चार्ट। * सी.डी. * डी.वी.डी. * दूरदर्शन * संगणक * संदर्भ साहित्य	* सरल-स्पष्ट उच्चारण एवं हाव-भाव, लय गति के साथ दोहे प्रयाण गीत, बोधकथा की प्रस्तुति करता है। * दूसरे विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत किए गए विषयों को दोहराता है। * उचित हाव-भाव, लय, गति के साथ आरोह-अवरोह के साथ प्रस्तुति में रुचि लेता है। * अंकों का शुद्ध उच्चारण करता है। * अपने दैनिक व्यवहार में अंकों का उपयोग करता है। * प्रयाणगीत के माध्यम से साहस एवं देशप्रेम की भावना जागृत होती है। * दोहे के माध्यम से भावनाओं एवं तनाव का समयोजन होता है। * प्राचीन साहित्य से परिचित होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	आरोह–अवरोह, तान–अनुतान एवं बलाघात की ओर ध्यान देते हुए बातचीत करता है।	* सी.डी. * डी.वी.डी. * रेडियो * ध्वनिफीत * संदर्भ साहित्य	* वर्ण, शब्द के मानक उच्चारण से अवगत होता है। * औपचारिक–अनौपचारिक बातचीत में वर्ण एवं शब्दों का मानक उच्चारण करता है। * बातचीत करते समय विराम चिह्न, भावानुसार आरोह–अवरोह, तान–अनुतान, बलाघात पर ध्यान देता है। * प्रभावी संभाषण की ओर उन्मुख होता है। * भाषण प्रतियोगिता में भाग लेता है। * भाषण–संभाषण करने का आत्मविश्वास जग जाता है। * बातचीत में अपने विचार एवं भावों के उचित संप्रेषण की क्षमता में वृद्धि होती है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

भाषाई कौशल/क्षेत्र : वाचन

कक्षा–आठवीं

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल–** * **वाचन की डगर पर शब्दों का सफर,** कृति : वाक्यों के अलग–अलग शब्द और विराम चिह्नों के कार्ड विद्‌यार्थियों के गले में लटकाना। उनका उचित क्रम लगाते हुए अर्थपूर्ण वाक्य बनाकर वाचन करना।	* शब्द कार्ड। * विरामचिह्नों (संकेतों) के कार्ड।	* खेल में रुचि लेता है। * अर्थपूर्ण पाठ्येतर वाचन में अभिरुचि बढ़ती है। * निर्णय क्षमता में वृद्‌धि होती है।	* मौखिक कार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन
१.	विज्ञान कथा का वाचन करना–कराना।	* वैज्ञानिकों के चित्र। * विद्‌यार्थी संदर्भ साहित्य कोना। * संदर्भ साहित्य	* हाव–भाव के साथ वाचन करता है। * विज्ञान कथा के वाचन में रुचि बढ़ती है। * उचित गति के साथ प्रकट एवं मौन वाचन करता है। * वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है। * वैज्ञानिकों एवं उनके अन्वेषण के प्रति कौतुहल जागृत होता है। * शुद्‌ध एवं निर्दोष वाचन की ओर उन्मुख होता है।	* मौखिककार्य * कृति *प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प

अ. क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	जिला, राज्य की महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों से संबंधित सामग्री का वाचन करना।	* मानचित्र। * महत्वपूर्ण स्थलों के चित्र, चार्ट * महत्वपूर्ण स्थलों की जानकारी संबंधी चार्ट। * सी. डी. * डी.वी.डी.	* अपने जिले एवं राज्य के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों से संबंधित सामग्री का वाचन करता है। * वाचन के पश्चात आपस में चर्चा करता है। * वाचन करते समय उचित आरोह-अवरोह एवं मानक उच्चारण की ओर उन्मुख होता है। * स्पष्ट, शुद्ध, मुखर वाचन एवं मौन वाचन की ओर प्रवृत्त होता है। * आकलन क्षमता बढ़ती है। * अपने जिले एवं राज्य के महत्वपूर्ण स्थलों से परिचित होता है। * अपने जिले और राज्य के प्रति आत्मीयता बढ़ती है। * अपनी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के प्रति गर्व महसूस करता है। * इन स्थलों के संरक्षण की भावना विकसित होती है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन * स्वाध्याय * प्रकल्प
३.	राज्य/राष्ट्र की महान विभूतियों, शहीदों की जीवनी का वाचन करना।	* महान विभूतियों एवं शहीदों के चित्र। * उनकी जीवनी का चार्ट * संदर्भ साहित्य	* महान विभूतियों एवं शहीदों की जीवनी के वाचन में रुचि लेता है। * उचित हावभाव, आरोह-अवरोह स्पष्ट एवं मानक उच्चारण के साथ मुखर वाचन करने की ओर उन्मुख होता है। * आकलन क्षमता बढ़ती है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* मौन वाचन की ओर प्रवृत्त होता है। * वाचन के विषयों पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देता है। * महान विभूतियों एवं शहीदों की जीवनी से प्रेरणा प्राप्त कर सन्मार्ग व सदाचार के मार्ग पर चलने की ओर प्रवृत्त होता है। * राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय एकात्मता की भावना विकसित होती है। * नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास होता है। * शब्दसंपत्ति का विकास होता है। * महान विभूतियों और शहीदों के प्रति आदरभाव विकसित होता है।	* प्रकल्प * सहपाठी मूल्यांकन
४.	* बाल/किशोर साहित्य का आरोह–अवरोह के साथ वाचन करना। * १ से १०० तक के अक्षरों में लिखे अंकों का वाचन करना।	संदर्भ साहित्य बाल गीत, किशोर कथा, आदि का संग्रह। चार्ट। अक्षरों में लिखे अंको के कार्ड तथा चार्ट।	* बाल/किशोर साहित्य का आवश्यकतानुसार उचित आरोह–अवरोह, तान–अनुतान, हाव–भाव, लय–ताल के साथ वाचन करता है। * बाल/किशोर साहित्य पढ़ने की वृत्ति जागृत होती है। * पूरक वाचन में रुचि लेता है। * पढ़े गए विषयों पर आधारित पूरक वाचन करता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* पढ़े गए संदर्भों के पात्रों के साथ सह संबंध स्थापित होता है। * भावनाओं, तनावों का समयोजन होता है। * १ से १०० तक के अक्षरों में लिखे अंकों का वाचन करता है। * व्यावहारिक जीवन में इन अंकों का प्रयोग करता है।	
५.	यात्रा वर्णन, रेखाचित्र, संस्मरण, पत्र का वाचन करना/कराना।	* संदर्भ-साहित्य	* यात्रावर्णन, रेखाचित्र, संस्मरण, पत्र आदि के वाचन में रुचि लेता है। * पूरक वाचन में रुचि जागृत होती है। * वाचन के माध्यम से आकलन क्षमता में वृद्धि होती है। * पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देता है। * साहित्य की विविध विधाओं से परिचित होता है। * उपरोक्त विभिन्न विषयों के वाचन से भावनाओं एवं तनावों का समायोजन होता है। * उचित-अनुचित में फर्क करने की क्षमता विकसित होती है। * प्रभावी वाचन की ओर अग्रसर होता है। * आदर्श वाचन प्रतियोगिता में सहभागी होता है। * पत्रों के प्रारूप से परिचित होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * प्रकल्प

भाषाई कौशल/क्षेत्र : लेखन **कक्षा–आठवीं**

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल–** उलट–फेर : कृति : दिए गए शब्दों के मात्राओं का उलट–फेर करके नए अर्थपूर्ण शब्द बनाकर लिखना। उदा : नाक–कान रोज–जोर साहस–सहसा मीन–नीम	* शब्द कार्ड।	* खेल में रुचि लेता है। * वर्णों एवं मात्राओं में उलट–फेर करके नए अर्थपूर्ण शब्द बनाकर लिखता है। * जिज्ञासा वृत्ति का विकास होता है। * विचार एवं विश्लेषण क्षमता में वृद्धि होती है। * शब्द संपदा का विकास होता है। * सुडौल, सुपाठ्य, निर्दोष लेखन की ओर उन्मुख होता है। * नवीन शब्दों का भाषण–संभाषण एवं लेखन में प्रयोग करता है। * खेल के माध्यम से तनाव, भावनाओं का समायोजन होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	**अनुलेखन : सुलेखन, श्रुत लेखन** करना। (परिच्छेद)	* परिच्छेद चार्ट।	* परिच्छेद के अनुलेखन, सुलेखन, शुद्ध लेखन में रुचि लेता है। * सुडौल, सुपाठ्य लेखन की वृत्ति बढ़ती है। * निर्दोष शुद्ध लेखन, श्रुत लेखन की ओर उन्मुख होता है। * लेखन में विराम चिह्नों का प्रयोग करता है। * लेखन प्रतियोगिताओं में सहभागी होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक मूल्यांकन * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
२.	**शुद्धलेखन करना** : (नाट्यांश, यात्रावर्णन, आत्मकथा आदि।) १ से १०० तक के अंकों का अक्षरों में लेखन करना।	* अंकों, अक्षरों के चार्ट। * संदर्भ साहित्य	* विद्यार्थी स्वयंस्फूर्ति से यात्रावर्णन, आत्मकथा आदि का लेखन करता है। (दिए गए विषय पर) * उपरोक्त विधाओं की लेखन पद्धति से परिचित होता है। * नाट्यांश, यात्रावर्णन, आत्मकथा आदि का लेखन करने की ओर अग्रसर होता है। * अंकों का अक्षरों में सही लेखन करता है। * अंकों के लेखन का दैनिक व्यवहार में प्रयोग करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * सहपाठी मूल्यांकन * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
३.	अन्य विधाओं का शुद्ध लेखन। (कहानी, छोटी कविता, भाषण नमूना आदि।) (शांति, विश्वबंधुता, अनुशासन, ईमानदारी, व्यसनमुक्ति)	* अपूर्ण कविताओं का चार्ट। * अपूर्ण कहानियों के चार्ट। * भाषण के विषय।	* अपूर्ण कविता को अपने शब्दों में पूरी करता है। * कहानियों को अपने विचारों के अनुसार पूर्ण करता है। * भाषण के नमूने तैयार करता है। * सृजनात्मक शक्ति का विकास होता है। * लेखन के माध्यम से अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है। * लेखन में पूर्व परिचित उद्धरण, मुहावरे, कहावतें आदि का प्रयोग करते हुए प्रवाहमय लेखन की ओर प्रवृत्त होता है। * भावनाओं का समायोजन होता है। * जीवनमूल्यों को अपनाने की ओर उन्मुख होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * प्रकल्प

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* लेखन स्पर्धाओं में सहभागी होता है। * प्रभावशाली ढंग से शब्दों में अभिव्यक्त होने का प्रयास करता है।	
४.	पठित–अपठित गद्य–पद्य पर प्रश्न तैयार करके उत्तर लिखना।	* गद्य–पद्य परिच्छेद चार्ट्स * संदर्भ साहित्य	* प्रश्न निर्मिति कौशल विकसित होता है। * विचारशक्ति, तर्कशक्ति आदि गुणों का विकास होता है। * विश्लेषण क्षमता विकसित होती है। * स्वयं तैयार किए गए प्रश्नों के उत्तर लिखता है। * विचार एवं लेखन में अचूकता, एकरूपता आदि की ओर उन्मुख होता है। * कल्पनाशक्ति का विकास होता है। * लघूत्तरी, वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की रचना करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय
५.	स्वयंस्फूर्त भाव से व्यावसायिक पत्र, निबंध, वृत्तांत, घटना आदि का लेखन करना।	चित्र, मुद्दों के चार्ट, प्रसंग, घटना के उदाहरणों के चार्ट।	* स्वयंस्फूर्त भाव से पत्र, निबंध वृत्तांत, घटना आदि का अपने शब्दों में लेखन करता है। * विचारशक्ति, कल्पनाशक्ति आदि का विकास होता है। * अपने अनुभव के आधार पर निबंधादि विधाओं में सर्जनशीलता निर्माण होती है। * प्रसंग, घटना का यथातथ्य वर्णन अपने लेखन में करता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपुस्तक कसौटी * प्रकल्प

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			✻ आपदा प्रबंधन संबंधी सजगता पैदा होती है। ✻ पत्रलेखन से मित्रों, सहपाठियों एवं रिश्तेदारों से आत्मीयता बढ़ती है। ✻ औपचारिक पत्र लेखन एवं वृत्तांत लेखन के माध्यम से भावी जीवन की तैयारी की ओर उन्मुख होता है एवं परिचित होता है।	

भाषाई कौशल/क्षेत्र : क्रियात्मक व्याकरण

कक्षा–आठवीं

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल :** **खेल–खेल में खोज** कृति : विभिन्न प्रकार के शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया) शब्द चित्र के माध्यम से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया का वर्गीकरण करना।	* शब्द चित्र चार्ट। * चित्र * वाक्य पट्टी।	* विद्यार्थी खेल में रुचि लेता है। * खेल–खेल के माध्यम से संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया की पहचान करता है। * विकारी शब्दों का वर्गीकरण करता है। * वर्गीकरण करने की क्षमता का विकास होता है। * खेल के माध्यम से तनाव का समायोजन होता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य
१.	* पुनरावृत्ति : (विकारी शब्द, शब्दों का लिंग, वचन, काल के भेद (उपभेदों सहित) विराम चिह्न, वर्तनी) * शब्द भेद : अविकारी शब्दों के भेद	* वाक्य पट्टियाँ, विभिन्न शब्दों के चार्ट।	* पिछली कक्षा में पढ़े हुए, घटकों की पुनरावृत्ति में रुचि लेता है। पुनरावृत्ति से आकलन दृढ़ होता है। * पूर्व परिचित शब्दों का लेखन वाचन में दृढ़ीकरण करता है। * शब्दों का लेखन, भाषण–संभाषण में प्रयोग करता है। * अविकारी शब्द भेदों से प्रयोग के माध्यम से परिचित होता है। * भाषण, लेखन में अविकारी शब्दों का प्रयोग करता है। * शब्द संपदा बढ़ती है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी

अ. क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* वाक्य में अविकारी शब्दों के स्थान एवं कार्य से परिचित होता है। * भाषा के सौंदर्यात्मक स्वरूप से परिचित होता है। * रचनात्मकता का विकास होता है। * वर्गीकरण क्षमता का विकास होता है। * भाषा के शास्त्रीय स्वरूप से परिचित होता है।	
२.	**कृदंत - तद्धित** का सामान्य परिचय, प्रयोग के माध्यम से करना-कराना।	शब्द सारिणी, शब्द कार्ड वाक्य पट्टियाँ।	* प्रयोग के माध्यम से कृदंत एवं तद्धित से परिचित होता है। * भाषण-संभाषण, लेखन में प्रयोग करता है। * वर्गीकरण क्षमता का विकास होता है। * नए-नए शब्दों से परिचित होता है। * कृदंत-तद्धित की रचना करने में रुचि लेता है। * कृदंत-तद्धित के मूल शब्दों को अलग करने की क्षमता विकसित होती है।	* निरीक्षण * प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * प्रकल्प
३.	प्रयोग के माध्यम से वाक्यों के प्रकारों की जानकारी प्राप्त करना-कराना। (अर्थ के अनुसार)	* वाक्य तालिका चार्ट, * वाक्य पट्टियाँ।	* वाक्य में प्रयुक्त क्रियारूप से वाक्य का अर्थ समझता है। * वाक्य के अर्थ को समझते हुए कृति करता है।	* प्रात्यक्षिक * मौखिककार्य * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			❋ अर्थ विश्लेषण की क्षमता विकसित होती है। ❋ सूचना के अनुसार वाक्य का अर्थ के अनुसार परिवर्तन करता है। ❋ वर्गीकरण विश्लेषण क्षमता विकसित होती है। ❋ वाक्य रचना की पद्धति से अवगत होता है। ❋ वाक्य के प्रकारों से परिचित होता है।	❋ सहपाठी मूल्यांकन ❋ सहपुस्तक कसौटी
४.	प्रयोग के माध्यम से वाक्य में प्रयुक्त कर्ता, कर्म, क्रिया का स्थान सहित परिचय करना–कराना।	❋ वाक्य पट्टियाँ ❋ वाक्यतालिका ❋ शब्दों के चार्ट ❋ परिच्छेद के चार्ट्स	❋ प्रयोग के माध्यम से वाक्य में आए हुए कर्ता, कर्म, क्रिया से परिचित होता है। ❋ वाक्य की संरचना से अवगत होता है। ❋ वाक्य में कर्ता, कर्म, क्रिया का स्थान एवं कार्य से परिचित होता है। ❋ वर्गीकरण, विश्लेषण क्षमता विकसित होती है। ❋ शुद्ध लेखन, मानक लेखन करने की ओर उन्मुख होता है।	❋ प्रात्यक्षिक ❋ मौखिक कार्य ❋ निरीक्षण ❋ कक्षाकार्य ❋ स्वाध्याय ❋ सहपुस्तक कसौटी ❋ सहपाठी मूल्यांकन
५.	मुहावरों, कहावतों का सार्थक वाक्यों में प्रयोग करना–कराना।	❋ मुहावरों, कहावतों का चार्ट ❋ मुहावरों तथा अर्थों की तालिका। ❋ कहावतों पर आधारित घटनाओं के चित्र अथवा वर्णन करनेवाले चार्ट।	❋ मुहावरों, कहावतों का वाक्यों में सार्थक प्रयोग करता है। ❋ मुहावरों एवं कहावतों द्वारा लोकसाहित्य के भाषासौंदर्य से परिचित होते हुए लिखने में रुचि निर्माण होती है। ❋ वाक्यों में मुहावरों, कहावतों का प्रयोग करते समय शब्दों का लिंग, वचन आदि का ध्यान रखता है।	❋ प्रात्यक्षिक ❋ मौखिककार्य ❋ निरीक्षण ❋ कक्षाकार्य ❋ स्वाध्याय

अ. क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* मुहावरों, कहावतों से भाषण, लेखन को प्रभावी बनाने का प्रयास करता है। * भाषा सौंदर्य की ओर आकर्षित होता है। * कथन अथवा लेखन को संक्षिप्त परंतु सारगर्भित बनाने की ओर उन्मुख होता है।	* प्रकल्प

भाषाई कौशल/क्षेत्र : व्यावहारिक सृजन

कक्षा–आठवीं

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **भाषाई खेल :** **मूक अभिनय–** कृति : किसी कार्यक्रम या समारोह की पूर्व तैयारी हेतु की जाने वाली सभी कृतियों का मूक अभिनय (आंगिक अभिनय) करना।	* कार्यक्रम/समारोह के चित्र। * कार्यक्रम/समारोह के चार्ट। * कार्यक्रम की तैयारी में की जाने वाली विभिन्न कृतियों की सूची। * समारोह में की जाने वाली विभिन्न कृतियों की सूची।	* खेल में रुचिपूर्वक सहभागी होता है। * कार्यक्रम, समारोह में की जाने वाली कृतियों का मूक आंगिक अभिनय करता है। * आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। * निरीक्षण क्षमता विकसित होती है। * नियोजित एवं क्रमबद्ध कार्य करने की ओर उन्मुख होता है। * संदर्भानुसार सार्थक कृति करने की ओर अग्रसर होता है। * अभिनय कौशल में अभिवृद्धि होती है। * भावी जीवन में अभिनय को व्यवसाय के रूप में अपनाने हेतु उन्मुख होता है। * निर्णय क्षमता में अभिवृद्धि होती है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
१.	**अनुवाद :** * मातृभाषा के संवादों का हिंदी में अनुवाद करके लिखना।	* वाक्य पट्टी * छोटे परिच्छेद का चार्ट	* मातृभाषा के संवादों का हिंदी में मौखिक अनुवाद करने में रुचि लेता है। * मौखिक अनुवाद का लेखन करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी भाषा में सहसंबंध स्थापित करता है। * मातृभाषा एवं हिंदी की समानता व भिन्नता से परिचित होता है।	* मौखिककार्य * कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन-अनुभव	अध्ययन-अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
			* मातृभाषा के साथ-साथ हिंदी भाषा के प्रति लगाव बढ़ता है। * दैनिक व्यवहार में हिंदी के प्रयोग की ओर उन्मुख होता है।	
२.	**व्यावसायिक लेखन :** सम-सामायिक विषयों पर हास्य-व्यंग्य, रेखाचित्र रेखन एवं लेखन करना।	* सम-सामयिक विषयों के चित्र। * सम-सामयिक विषयों के कार्ड एवं चार्ट।	* हास्य-व्यंग्य के विषयों में रुचि लेता है। * सामाजिक परिस्थितियों से अवगत होता है। * सम-सामयिक विषयों का हास्य-व्यंग्य के रूप में लेखन करता है। * सम सामयिक विषयों पर विचार विमर्श एवं तर्क करने की क्षमता विकसित होती है। * हास्य-व्यंग्य, लेखन द्‌वारा भावनाओं एवं तनावों का समायोजन होता है। * सृजन एवं कल्पनाशीलता की अभिवृद्‌धि होती है। * विश्लेषण क्षमता का विकास होता है। * भावी जीवन में हास्य-व्यंग्य रेखन एवं लेखन को व्यवसाय के रूप में अपनाने हेतु उन्मुख होता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * प्रकल्प
३.	**नाट्यकला :** * कठपुतली का सामान्य परिचय करना/कराना।	* कठपुतली का चित्र एवं प्रतिकृति * संदर्भ साहित्य	* कठपुतली के खेल में रुचि लेता है। * संरचना एवं प्रयोग के माध्यम से कठपुतली के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।	* कृति * प्रात्यक्षिक * निरीक्षण

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन–अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
	* **कठपुतली** के माध्यम से किसी भी पाठ्यक्रमपूरक विषय की प्रस्तुति करना।		* कठपुतली के माध्यम से पाठ्क्रम पूरक विषयों की प्रस्तुति करता है। * सांस्कृतिक विरासत एवं परंपरा के प्रति आत्मीयता पैदा होती है। * कठपुतली खेल के माध्यम से भावनाओं एवं तनावों का समायोजन होता है। * सृजन एवं कल्पनाशक्ति का विकास होता है। * अपने जीवन में कठपुतली खेल को व्यवसाय के रूप में अपनाने की ओर उन्मुख होता है। * मनोरंजन के माध्यम से पाठ्यवस्तु का दृढ़ीकरण होता है। (ज्ञानरचनावाद)	* कक्षाकार्य * सहपाठी मूल्यांकन
४.	**लिप्यंतरण** : * गद्य–पद्य पंक्तियों का रोमन (अंग्रेजी) लिपि में लेखन करना। * अंग्रेजी पंक्तियों का देवनागरी (हिंदी) लिपि में लेखन करना।	* हिंदी गद्य–पद्य की वाक्य पट्टियाँ। * अंग्रेजी की वाक्य पट्टियाँ। * अंग्रेजी में सुविचार की पट्टियाँ। * हिंदी गद्य–पद्य पंक्तियों का चार्ट।	* हिंदी गद्य–पद्य पंक्तियों का रोमन लिपि में लिप्यंतरण करने में रुचि लेता है। * अंग्रेजी गद्य–पद्य पंक्तियों का देवनागरी में लिप्यंतरण करता है। * मुहावरों, कहावतों का प्रयोग वाक्यों में करते समय शब्दों का लिंग–वचन आदि का ध्यान रखता है। * देवनागरी एवं रोमन लिपि में समन्वय स्थापित करता है। * देवनागरी एवं रोमन लिपि की समानता एवं भिन्नता से अवगत होता है।	* निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन

अ. क्र.	अध्ययन–अनुभव	अध्ययन– अध्यापन सामग्री	प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन	सतत सर्वंकष मूल्यमापन
५.	सांकेतिक चिह्न : * संगणक की प्रारंभिक जानकारी * मुद्रित शोधन stet - यथावत ही रखें d / ◡ - हटाएँ व जोड़ें (λ) - बदलें L - अक्षर बदलें (।) - पूर्ण विराम चिह्न लगाएँ	* संगणक की प्रतिकृति/ चित्र * संगणकीय चिह्नों के चित्र एवं नाम के चार्ट।	* प्रयोग के माध्यम से संगणक के सांकेतिक चिह्नों की जानकारी प्राप्त करता है। * संगणक पर कार्य करने में रुचि लेता है। * आधुनिक यांत्रिक तकनीक से परिचित होता है। * मुद्रित शोधन के संकेतों एवं उनके अर्थ से अवगत होता है। * दूसरे विद्‌यार्थी द्‌वारा लिखित सामग्री में मुद्रित शोधन चिह्नों का उपयोग करते हुए उचित संशोधन करता है। * जीवन में संगणक/मुद्रित शोधन को व्यवसाय के रूप में अपनाने हेतु रुझान बढ़ता है।	* प्रात्यक्षिक * निरीक्षण * कक्षाकार्य * स्वाध्याय * सहपाठी मूल्यांकन * सहपुस्तक कसौटी * प्रकल्प

अध्ययन–अध्यापन संबंधी निर्देश :

१. प्रस्तुत पाठ्यक्रम में दी गई अध्ययन–अध्यापन सामग्री उदाहरण मात्र है। शिक्षक विषय–वस्तु के अनुसार यथोचित अन्य सामग्री का भी उपयोग कर सकते हैं।

२. पाठ्यक्रम में प्रतिक्रिया, उपयोजन, व्यावहारिक परिवर्तन के अंतर्गत दिए गए मुद्दे उदाहरण के तौर पर हैं। अपेक्षित वर्तन–परिवर्तन की दृष्टि से अन्य मुद्दों का भी समावेश किया जा सकता है।

३. सतत सर्वंकष मूल्यमापन के अंतर्गत दिए गए साधन–तंत्र महाराष्ट्र राज्य शैक्षणिक संशोधन व प्रशिक्षण परिषद द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार हैं। संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तिका 'सातत्यपूर्ण सर्वंकष मूल्यमापन भाग १,२,३, के आधार पर दिए गए आठ साधन तंत्रों में से आशय एवं कौशल के अनुरूप उपयोगी साधन तंत्र इस्तेमाल करने के लिए शिक्षक स्वतंत्र हैं।

४. पाठ्यक्रम के केंद्रीय तत्त्व, जीवनमूल्य, जीवनकौशल, संवैधानिक मूल्य से संबंधित निर्देश उदाहरण मात्र हैं। अपनी सोच, कल्पकता, सृर्जनशीलता के माध्यम से उपर्युक्त बातों में से विद्यार्थियों के वयोगटानुसार उनके जीवन में उतारने व संस्कार करने का प्रयास करने के लिए शिक्षक पूरी तरह स्वतंत्र हैं।

५. कक्षा की सभी कृतियों–उपक्रमों में सामान्य, विशेष, असाधारण सभी विद्यार्थियों को यथासंभव सम्मिलित किया जाए।

६. कृतियुक्त, उपक्रमशील शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका सुलभक की है। आवश्यकतानुसार वह अध्ययन में सहायक सिद्ध हों।

७. जिस घटक का कक्षा में अध्ययन–अध्यापन करना हो, उसकी सूचना शिक्षक, विद्यार्थियों को एक दिन पूर्व दें ताकि विद्यार्थी तैयारी के साथ कक्षा में आएँ।

८. बालस्नेही, बालकेंद्रित, कृतियुक्त शिक्षा प्रणाली के अंतर्गत आनंददायी वातावरण में तनावरहित, सहज अध्ययन का अत्यधिक महत्व है। अत: 'लर्निंग टू लर्न / ज्ञानरचनावाद' के द्वारा विद्यार्थियों को स्वयं अध्ययन के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराएँ।

९. प्रभावी अध्ययन–अध्यापन के लिए विभिन्न अध्यापन पद्धतियों का इस्तेमाल समय की माँग है। शिक्षक इस दृष्टि से तत्पर रहें। कथाकथन, प्रश्नोत्तर, नाट्यीकरण, गुटचर्चा, सांघिक अध्यापन, प्रयोग, प्रात्यक्षिक आदि अध्यापन पद्धतियों का उपयोग करें।

१०. शिक्षक पाठ्यक्रम के आधार पर भाषाई उद्देश्यों को साध्य करने की दिशा में स्वयं पाठ्यसामग्री तैयार कर सकते हैं।

११. विद्यार्थियों के स्वयंअध्ययन को विशेष महत्व देकर समय–समय पर आवश्यक वातावरण, सूचनाएँ, निर्देश दिए जाएँ।

१२. व्याकरण का अध्ययन–अध्यापन परिभाषा समझाते हुए नही बल्कि प्रयोग द्वारा क्रियात्मक पद्धति से हों।

१३. व्यावहारिक भाषा सृजन एक प्रकार से व्यवसायोपयोगी सृजन ही है। अनुवाद, व्यावसायिक लेखन, नाट्यकला, लिप्यंतरण, सांकेतिक चिह्नों को स्तरीय पद्धति से पाठ्यक्रम में विस्तारित किया गया है ताकि विद्यार्थी भविष्य में अपने व्यवसाय के बारे में सोचने के लिए प्रेरित हो। इस संदर्भ में शिक्षक सकारात्मक भूमिका लें।

१४. निर्देशित अध्ययन–अध्यापन सामग्री के अतिरिक्त शिक्षक अपने ढंग से अन्य सामग्री का उपयोग कर सकते हैं।

१५. शिक्षक के पास अपना शब्दकोश तथा संदर्भ ग्रंथ होना आवश्यक है। शब्दकोश देखने की आदत छात्रों में डाली जाएँ।

१६. शिक्षा में होनेवाले नित नवीन परिवर्तन जैसे सतत सर्वंकष मूल्यमापन, पुनर्रचित अभ्यासक्रम आदि की यथासंभव सूचनाएँ पालकों को भी देना अपेक्षित है।

मूल्यांकन संबंधी सामान्य निर्देश

१) आठवीं कक्षा तक निरंतर सर्वांगीण क्रमिक मूल्यांकन का प्रावधान किया गया है। सभी विद्यार्थियों की गुणवत्ता को विकसित करने पर ध्यान दिया जाए किंतु किसी भी विद्यार्थी को अनुत्तीर्ण नहीं करना है।

२) मूल्यांकन प्रक्रिया में लचीलापन हो। मूल्यांकन की पद्धति, प्रक्रिया में विविधता हो। मूल्यांकन कृतिशील, तनावमुक्त, बालस्नेही, विद्यार्थी केंद्रित हो।

३) मूल्यांकन के सभी स्तरों/प्रकारों का अभिलेख रखने में भी लचीलापन हो। मूल्यांकन संकलित एवं आकारिक दोनों रूपों में करके अंत में श्रेणी का प्रयोग किया जाए।

४) दैनिक अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया में मूल्यांकन को स्थान हो।

५) भाषा विषय के मूल्यांकन में केवल आशय की परीक्षा न लेकर भाषा–कौशलों पर अधिक ध्यान दिया जाए।

६) मूल्यांकन में समन्वित बहुसमावेशित पद्धति को अपनाया जाए। उदाहरणार्थ श्रवण, भाषण–संभाषण, वाचन, लेखन, क्रियात्मक व्याकरण, व्यावहारिक सृजन के मूल्यांकन के लिए 'जीवन कौशल' जीवन मूल्य' संबंधी पाठों/पाठ्यांशों का अधिक उपयोग किया जाए।

७) मूल्यांकन प्रक्रिया भयमुक्त, रोचक, प्रेरक, आत्मविश्वासवर्धक तथा सर्वांगीण विकास की ओर ले जाने वाली हो। मूल्यांकन के समय छात्रों को निरुत्साहित करनेवाले अपमान व्यंजक शब्दों, टिप्पणियों तथा किसी भी प्रकार की सजा अग्राह्य है। अनौपचारिक मूल्यांकन हो। सुधार के लिए अवसर प्रदान किए जाएँ। तुलना करनी ही हो तो संबंधित छात्र की पूर्व स्थिति के साथ की जाए। अगर पहले की अपेक्षा उसकी तैयारी बेहतर है तो उसका खुले आम उल्लेख कर उसे प्रोत्साहन दिया जाए। भाषा कौशलोंसंबंधी मूल्यांकन करते समय यह भी ध्यान में रखा जाए कि विद्यार्थी किस परिवेश से आया है। आरंभिक कक्षाओं में बोली की शब्दावली, स्थानीय शब्दरूपों को वर्जित न माना जाए। आत्मीयतापूर्वक मानक शब्दों का परिचय कराया जाए।

८) मूल्यांकन में ज्ञानरचनावाद, स्वाध्याय, समस्याओं के निराकरण की क्षमता आदि का भी ध्यान रखा जाए। ये क्षमताएँ न केवल भाषा के संबंध में बल्कि जीवन मूल्यों/कौशलों के क्षेत्र में भी विद्यार्थियों को सक्षम बनाती हैं।

९) मूल्यांकन इतना व्यापक एवं प्रोत्साहक हो कि छात्रों को अपने बलस्थानों तथा सृजनशक्ति का परिचय हो जाए।

१०) अध्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया में छात्रों से यथासंभव सहायता लें। सहपाठी मूल्यांकन एवं सहपुस्तक कसौटी को महत्व दिया जाए।

११) अध्यापक ऊपर दिए गए निर्देशों के अतिरिक्त मूल्यांकन की अन्य पद्धति, प्रक्रिया तथा साधनों का उचित प्रयोग करें।

टिप्पणी : १) प्रस्तावित पाठ्यक्रम में भाषाई खेल, अध्ययन–अनुभव, मूल्यांकन आदि के संबंध में यथास्थान उदाहरण एवं निर्देश दिए गए हैं। दिए गए उदाहरणों के अतिरिक्त अन्य शिक्षकों द्वारा उदाहरण भाषाई खेल, अध्ययन अनुभव भी दिए जा सकते हैं।

२) मूल्यांकन के संबंध में विस्तृत निर्देश मूल्यांकन संबंधी मार्गदर्शिका में देखे जा सकते हैं।

उपसंहार

प्रस्तुत पाठ्यक्रम केवल २००४ के पाठ्यक्रम की सीमाओं को ध्यान में रखकर नहीं बनाया गया है। इसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि इसमें शिक्षा नीति, अध्ययन–अध्यापन प्रक्रिया, समाज तथा देश की आवश्यकता आदि के संबंध में एन सी एफ २००५, आरटीई, एस सी एफ २०१० तथा एनसीईआरटी के अंतर्गत दिए गए निर्देशों का कठोरता के साथ पालन किया गया है। परिणामतः यह पाठ्यक्रम अपेक्षाकृत विद्यार्थी केंद्रित, समयानुकूल, व्यवहारोपयोगी तथा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से बहुआयामी बन गया है। हमें विश्वास है कि यदि पाठ्यपुस्तक निर्मिति, अध्ययन–अध्यापन तथा सर्वांगीण क्रमिक मूल्यांकन आदि सभी स्तरों पर इन निर्देशों का सही रूप में कार्यान्वयन होगा तो हमारे विद्यार्थी आदर्श नागरिक के रूप में जीवन जीने, सफलतापूर्वक जीवनयापन करने तथा किसी भी प्रकार की चुनौती का सामना करने के लिए तैयार होंगे।

⊙⊙⊙